Q 10

उत्तर :

प्रतिवेदन

शीर्षक : कोविड 19 - जांच परीक्षण

विषय :- कोविड 19 की गति विधियों के संबंध मे

कोविड 19 की महामारी से सम्पूर्ण मानव जगत मे हाहाकार असंतुलन है। इस महामारी के प्रकोप को कम करने मे शासन प्रशासन पुरजोर से लगा हुआ है। कोविड 19 संबंधी गति विधियों की जांच पड़ताल के लिये एक अ.प.स की आवश्यकता थी। त्रि सदस्यीय समिति का गठन किया गया। समिति ने प्रशासन तथा क्रियान्वित कार्यों की सूक्ष्मता से निरीक्षण किया और इस संदर्भ मे कुछ नागरिकों को मंत्रणा मे लिया।

समिति ने निम्न लिखित सुझावों की सिफारिशें की, जो निम्न -

1. अस्पतालों मे नर्सिंग और सहायक स्टाफ की उपलब्धता बढ़ायी जाये।
2. प्रति रोगी दवाओं एवं पी-पी ई किट का प्रयोग हो।
3. सामाजिक दूरी एवं मास्क लगाना तथा सैनिटाइजर के प्रयोग को बढ़ावा दें।
4. बीमारी के संदर्भ मे लोगों मे जागरुकता एवं प्रतिरोधी विधियों का प्रचार प्रसार हो।
5. स्थानीय तथा समाज सेवी संगठन जरुरी सामान एवं सुविधाओं का यथा स्थित प्रबंध करें।

इन सुझावों के साथ समिति ने सतर्क, सुरक्षित और जागरुक रहने की सिफारिश की।

हस्ताक्षर

सदस्य

— 1 2.

अध्यक्ष

v. शब्द / पृथक – आर्द्र / विनाश

vi. शुक – तोता, सुग्गा, कीर, सुआ

vii) कर्ण – कान

करण – कारक का एक भाग

Q. 4

उत्तर i. मनुष्य आज निम्नलिखित समस्याओं का शिकार है -

1. नैतिक मूल्यों का ह्रास
2. आर्थिक एवं सामाजिक समस्या
3. आपराधिक प्रवृत्तियाँ

ii) भौतिक स्तर से ऊँचा उठने के लिए मनुष्य - उचित - अनुचित की अनदेखी कर रहा है।

iii) नैतिक मूल्य वे गुण हैं जो व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण में सहायक होते हैं।
जैसे - ईमानदारी, विवेक आदि।

iv) आधुनिक मनुष्य की प्रबल इच्छा आकांक्षाएं नैतिक संकटों का रक्षण / जुटाता है।

v) नैतिक मूल्यों की तिलांजलि देकर समाज में सुख की कामना करना व्यर्थ है।

iv - खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे
अर्थ: अपमानित व्यक्ति शर्म के मारे क्रोधित होना
वाक्य प्रयोग : सारे अपराधी पुलिस को देखते-2 भाग गये पर अब वह निर्दोषों को परेशान कर रहे हैं, सच ही कहा गया है खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे।

vi - अन्धों में काना राजा :
अर्थ: मूर्खों के बीच अल्पज्ञ का भला
वाक्य प्रयोग - अनपढ़ों के गांव में एक पढ़े लिखे का होना सच में अन्धों में काना राजा ही है।

vii - हाथ आगे बढ़ाना-
अर्थ - मदद करना
वाक्य प्रयोग - प्रधानमंत्री के आह्वान पर गरीबों के कल्याण के लिए अनेकों लोगों ने हाथ बढ़ाया।

Q. 8

उत्तर: iii - घर - द्वार -
समास - द्वंद्व समास

iv - प्रति + उपकार - प्रत्युपकार
सन्धि - स्वर सन्धि

Q 6

उत्तर :

1. Quaterly - त्रैमासिक
2. Surplus - आधिक्य | अधिशेष
3. Treasury - कोष
4. Verification - जाँच - पड़ताल
5. Rubber stamp - मुद्रांकित रबड़
6. दूतावास - Embassy.
7. मताधिकार - Sufferage
8. राज - पत्र - Gazette.
9. न्यायिक अधिकार - Jurisdiction
10. अनुमोदन - Approval.

Q. 7

उत्तर :

1. अपना उल्लू सीधा करना ·

अर्थ :- स्वार्थ सिद्ध करना ·

वाक्य प्रयोग :- आधुनिक युग में सब अपना उल्लू सीधा करने में लगे हुए है किसी को समाज की चिंता नहीं।

iii) - तोते उड़ जाना - घबरा जाना

वाक्य प्रयोग :- परीक्षा में नकलची के पकड़े जाने से उसके तोते उड़ गये।

Q 5.

उत्तर :-

जिला धीश कार्यालय

रतलाम

क्रं ---/----/-- दिनांक --/--/--

कार्यालय आदेश

(प्रारूप)

विषय :- अनलॉक के बाद बाजार खोलने बाबत्

समस्त व्यापारियों एवं दुकानदारों को यह सूचित किया जाता है कि

1. अनलॉक की प्रक्रिया के तहत बाजार अब 8:00 बजे तक खुला रह सकते हैं।
2. सामाजिक दूरी, मास्क लगाना और सैनिटाइजर का प्रयोग करना अनिवार्य है।

अतः समस्त व्यापारियों एवं दुकानदारों से अपेक्षित है कि इन निर्देशों का पालन करें तथा उल्लंघन की स्थिति में कानूनी एवं दण्डात्मक कार्यवाही की जायेगी।

प्रेषित प्रतिलिपि

1. समस्त थाना प्रभारी
2. समस्त मंडी समिति

हस्ताक्षर

नाम ...

पद नाम ...

कार्यालय ...

शाप प्रतलाप : स्वतंत्रता अपने आप में स्वतंत्र नहीं होती है। बल्कि वह भी एक तंत्र में बंधी रहती है। उस तंत्र में अधिकारों और मर्यादाओं का समावेश होता है। प्रत्येक व्यक्ति की स्वतंत्रता दूसरे व्यक्ति के अधिकारों का अतिक्रमण नहीं कर सकती है। किन्तु जब स्वतंत्रता अपनी सीमाओं को लांघती है तो वह स्वेच्छाचारिता (अपनी इच्छाओं के अनुरूप) और उच्छृंखलता (स्वच्छंदता) में बदल जाती है। ऐसी स्थिति में वह उन्मुक्त और उद्दंडता का स्वरूप धारण कर लेती है।

2) ऐतिहासिक परिभाषा :- जो स्वतंत्रता हमें प्राप्त होती है वह दूसरे व्यक्ति की स्वतंत्रता में बाधक नहीं होनी चाहिए

शाप प्रतलाप : स्वतंत्रता हमें अपने व्यक्तिगत अधिकारों दायित्वों का बोध कराती है। हमारी स्वतंत्रता का विस्तार वहीं तक है जहां तक किसी अन्य व्यक्ति के अधिकारों एवं स्वतंत्रता का हनन नहीं होता है। अर्थात किसी विद्वान ने यह प्रकट किया कि हमारी स्वतंत्रता का विस्तार वहीं तक है जहां से दूसरे की नाक शुरू होती है। जैसे भारत की स्वतंत्रता अपनी भौगोलिक सीमाओं तक निहित किसी अन्य देश की सीमाओं का अतिक्रमण करना उस देश की स्वतंत्रता में बाधक है।

Q. 3

उ. - हम भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न, समाजवादी, पंथ निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा, राष्ट्र की एकता और अखण्डता सुनिश्चित करने वाली बन्धुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर 1949 को एतद् द्वारा इस संविधान को आत्मार्पित एवं अधिनियमित करते हैं।

Q. 4

उ. - सांवैधानिक स्वतंत्रता : अपने आप में निरपेक्ष नहीं है। वह एक तंत्र में स्थापित होती है। उस तंत्र में अधिकार और दायित्व एक साथ निहित होता है। स्वतंत्रता स्वच्छंदता, और स्वेच्छाचारिता को बढ़ावा नहीं देता है। स्वतंत्रता सदैव मर्यादित एवं दायित्व पूर्ण होती है।

उपरोक्त पंक्तियों का आशय पहचान

1. स्वतंत्रता अपने आप में निरपेक्ष नहीं है। एक सीमा पार कर जाने के बाद स्वतंत्रता स्वेच्छाचारिता एवं उच्छृंखलता में बदल जाती है।

Q. 2

We admit this that there are many kinds of evils prevailing in the country today. Corruption, bribery and mal practices are rampant everywhere. and not only ordinary people but most responsible administrators are also involved in it, this dirty quagmire. It is essential to put an end to these evils. But we want to urge upon our students and young man that this can be done only through constructive activities and not through destructive ones. The fact is that as far as possible students should not disturb their studies by involving themselves in the dirty game of politics etc. Learning and knowledge are the greatest asset of man. By loosing them he will get nothing but only kicks. Even then if our students and young men have a desire to reform this nation, we are welcomed them with great pleasure and peace.

[R] उपसर्ग वे शब्दांश होते हैं जो किसी शब्द के पूर्व में लगकर शब्द के अर्थ में नवीनता लाते हैं उपसर्ग कहलाते हैं। जैसे -

अ + तिथि - अतिथि

उप + कार - उपकार

अन + उदार - अनुदार आदि।

[S]. राहुल सांकृत्यायन ने 'सरहपा' को हिन्दी का पहला कवि माना है।

[T]. कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर

1. प्रधानता - कर्मधारय समास में दूसरा पद (उत्तर) प्रधान होता है, जबकि बहुव्रीहि समास में कोई पद प्रधान नहीं होता है।

2. अर्थ प्रकृति स्वरूप - कर्मधारय समास में उपमेय तथा उपमान की विशेषता का, जबकि बहुव्रीहि समास में अन्य अर्थ प्रकट होता है।

3. समास विग्रह - कर्मधारय समास में - चन्द्रमुखी अर्थात चन्द्रमा के समान मुख

बहुव्रीहि समास - चक्रपाणि - अर्थात - चक्र है जिसके पाणि (हाथ) में - अर्थात - विष्णु।

[M] 11 वां विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन - 18-20 अगस्त '2018' को मॉरीशस में भारतीय - विदेश मंत्री श्री मती सुषमा स्वराज की ~~अध्यक्षता~~ मौजूदगी में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता मॉरीशस के प्रधानमंत्री - प्रवर प्रविन्द कुमार जगन्नाथ थे।

[N] कौरवी बोली कुरु क्षेत्र (दिल्ली, मेरठ आदि) में बोली जाती थी। यह खड़ी बोली उपवर्ग के अन्तर्गत आती है। कौरवी बोली का नामकरण 'राहुल सांकृत्यायन' ने किया था। कौरवी बोली जब मानक रूप में लिपिबद्ध की गई तो इसका नाम खड़ी बोली हो गया।

[O] - हिन्दी के वर्तमान काल का सर्वाधिक उपयुक्त नाम - 'आधुनिक काल' है।

[P]. जिन वर्णों का उच्चारण तालु से किया जाता है। तालव्य वर्ण कहलाते हैं।
जैसे - च वर्ग (च, छ, ज, झ, ञ)।

[Q] जिस संधि में प्रथम पद इ, ई या उ, ऊ, या ऋ हो तो बाद का पद आद्य इनके अतिरिक्त कोई अन्य स्वर हो तो क्रमशः य, व और र हो जाते हैं।

जैसे - साधु + उपदेश - साधूपदेश (यण संधि)
अनु + अय - अन्वय

2. मूल आशय में ज्ञात की सम्बद्धता
3. अप्रासंगिक वाक्यों / शब्दों का प्रयोग न हो
4. सीमित स्वरूप का ध्यान रखना।

[i] सरकारी, अर्द्ध सरकारी या निजी प्रतिष्ठानों में पत्रों, प्रतिवेदनों पर जो भी कार्यवाही टिप्पणी कार्यों के पश्चात् पर होती है, उसे ही लिखित रूप में तैयार करने को प्रारूपण या 'प्रारूप लेखन' कहते हैं।

- यह एक 'कच्चा लेख' होता है, जो अधिकारी के द्वारा कार्य पश्चात् अपने अंतिम / निष्कर्ष रूप में परिवर्तित होता है।
- यह सरकारी, अर्द्ध सरकारी एवं निजी प्रतिष्ठानों में पत्राचार जैसे का आशय होते हैं। जैसे- आदि सूचना, प्रतिवेदन आदि।

[J] ऐसी ध्वनियाँ जिनका उच्चारण नासिका / नाक द्वारा होता है, अनुस्वार (ं) कहलाता है।
जैसे - कंत, अंत, कंतक आदि।

[K] कंठ्य ध्वनियाँ वे वर्ण / आधार होते हैं जिनका उच्चारण कंठ की सहायता से किया जाता है।
जैसे - क, ख, ग, ह - कंठ्य ध्वनियाँ हैं।

[L] ज्ञापन पत्र एक प्रकार की 'सूचना' है, जो कोई नियोक्ता अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को देता है।

- इसका संबंध विभागीय अनुदेश, या निर्देश से होता है।
- यह उस स्थिति में जारी किया जाता है, जब नियोक्ता द्वारा अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को आदेश या निर्देश संप्रेषित करना होता है।
- यह पत्र लगभग 'आदेश' जैसा होता है।

जैसे - सिंह ने भाले से कुत्ते को मारा।

<u>अपादान</u> कारक - 'अलगाव' का बोध कराता है।

जैसे - पेड़ <u>से</u> पत्ता गिरता है।

[E] दो या दो से अधिक शब्दों या पदों के मेल से बनने वाले स्वतंत्र शब्द को समास कहते हैं। इसमें विभक्तियों का लोप हो जाता है।

जैसे - काली + घटा = काली-घटा आदि।

[F]. वे शब्दांश जो किसी शब्द के प्रारंभ/पूर्व में जुड़कर शब्द के अर्थ में नवीनता को प्रकट करते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।

जैसे - <u>अभि</u>मत, <u>प्र</u>हार, <u>उप</u>हार आदि।

[G] - संधि और समास में निम्नलिखित अन्तर है-

1. संधि - दो वर्णों के मेल से, जहाँ समास - दो शब्दों के मेल से बनती है।
2. संधि का 'विच्छेद' होता है, और समास का 'विग्रह' होता है।
3. संधि 'विकारी' होती है जबकि समास 'अविकारी' होते हैं।

जैसे - अनु + अय = अन्वय

यथा शक्ति - शक्ति के अनुसार।

[H]. पल्लवन का अर्थ किसी वाक्य/पद का भाव विस्तार या अर्थ की व्याख्या विस्तार से है।

<u>तीन विशेषताएं</u> :- भाषा तथा भाव की अभिव्यक्ति में सरलता, स्पष्टता और मौलिकता

हरि वंश Paper V - हिन्दी 09 - 02 - 2021

Q 1

[A] परसर्ग वे शब्द होते हैं जो संज्ञा पदों के बाद आते हैं जबकि विभक्ति वे शब्द हैं जो क्रिया पद से सम्बंध को प्रकट करती है।

- उदाहरण - राम का राज्याभिषेक हुआ। 'का' परसर्ग
राम को शक्तिपूजा। 'को' विभक्ति

[B] समान अर्थ रखने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं। ये मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं :

1. पूर्ण पर्यायवाची :- शब्दों के परिवर्तन से अर्थ का परिवर्तन न हो। जैसे - जलज, वारिज
2. पूर्णापूर्ण पर्यायवाची :- शब्दों के परिवर्तन से अर्थ में परिवर्तन हो जाये।
जैसे - कपड़े लटका। / लटकना (✓)
मुँह लटका। / लटकना (x)
3. अपूर्ण पर्यायवाची - जब समानार्थक शब्दों के प्रयोग से अर्थ भेद प्रकट हो।
जैसे - आँख चलना - (✓)
नेत्र चलना (x)

[C] अनौपचारिक पत्र जिन्हें शासकीय पत्र भी कहा जाता है, वे पत्र हैं जिनका प्रयोग शासकीय कार्यालयों में कार्य व्यवहार में लाया जाता है।
जैसे - परिपत्र, अनुस्मारक, प्रतिवेदन, आदि।

[D] करण तथा अपादान कारक में निम्नलिखित अंतर होता है
करण कारक से जिस उपकरण के माध्यम से कार्य को सम्पन्न किया जाता है।
अर्थात जिस साधन के माध्यम से कार्य हो।